AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (3), Issue (1), January-March 2026 ISSN: 3048-7951

माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० जगदीश कुमार[1]

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19011410
Review: 04/02/2026 Acceptance: 04/02/2026 Publication: 14/03/2026

सारांश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है| सामाजिक जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता होती है| शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में भी स्वीकार किया जाता है| मानव अपने भौतिक तथा सामाजिक वातावरण के साथ समायोजन की प्रक्रिया में तरह तरह के अनुभव प्राप्त करता है तथा अपने इन विभिन्न प्रकार के अनुभवों के आधार पर जीवन के सामान्य सिद्धांत विकसित करता है| व्यक्ति द्वारा निर्धारित जीवन के इन सिद्धांतों को ही मूल्यों के नाम से पुकारा जाता है| मूल्यों की जीवन में महत्ता को देखते हुए अब तक गठित सभी शिक्षा आयोगों ने मूल्य परक शिक्षा को अपनाने का सुझाव प्रस्तुत किया है| आज के तकनीकी जीवन में व्यक्ति के समक्ष मूल्यों के संकट की समस्या स्वाभाविक रूप से विकराल रूप ले रही है, मनुष्य उन मूल्यों को तिलांजलि देता जा रहा है जो वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के लिए आवश्यक होते है| प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक, सौंदर्यात्मक एवं सामाजिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है| मूल्यों के मापन हेतु जी. पी. शैरी एवं आर.पी. वर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य अनुसूची का प्रयोग किया गया| हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के मूल्यों के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा आजमगढ़ जनपद में हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 के 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया, जिसमे 100 हिंदी माध्यम एवं 100 अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी सम्मिलित थे|

मुख्य शब्द: माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, समाज एवं शिक्षा, मूल्यों का अध्ययन|

प्रस्तावना: मानव के जीवन में मूल्यों का महत्व बहुत अधिक है| उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से संबंधित होता है| यह मूल्य वह अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों से ही सीखने लगता है और धीमे- धीमे अपने अंतःकरण में ग्रहण कर लेता है, यदि उसका पालन- पोषण, शिक्षा - दीक्षा उत्तम वातावरण में हुआ है जहां उच्च नैतिक मूल्य जीवन के लक्ष्य प्रतिपादित होते हैं तो वह उन्हें ही अपने अन्दर आत्मसात् कर लेता है और यदि ऐसा नहीं है तो या तो वह किसी मूल्य को ग्रहण नहीं कर पाता या निम्न श्रेणी के मूल्यों को अपने जीवन

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, बी. एड. विभाग, श्री गांधी पी.जी. कॉलेज, मॉलटारी , आजमगढ़, Email: kumarjm11@gmail.com

का आधार बना लेता है| मूल्यों की श्रेष्ठता निर्धारित करने में तथा उन्हें आत्मसात् करने में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान है|

आधुनिक जीवन की जटिलता के कारण हमारा जीवन सरल नहीं रह गया है| इसके ऊपर अनेक दबाव हैं जो हमारे अन्दर तनाव की स्थिति उत्पन्न करते हैं| हमारे लिए मुख्य कार्य यह रह जाता है कि हम तनावों को कम करें चाहे इसके लिए हमें ऐसे कार्य भी करने पड़ें जो अन्य व्यक्तियों व समाज के लिए अनुचित हों| वर्तमान समय में धर्म के संबंध में भी दूषित धारणाएं हो गई हैं, या तो धर्म की मान्यता समाप्त हो रही है या यह केवल एक औपचारिक की भांति रह गया है| मूल्य निर्धारित शिक्षा के सम्बंध में **जोशी (1983)** ने अपने रिपोर्ट में कहा है कि विद्यालय की सब क्रियाओं, पाठ्यक्रम निर्माण, शिक्षण - विधियों एवं मूल्यांकन इत्यादि की इस प्रकार से संरचना होनी चाहिए कि वह स्वतः वांछित मूल्यों की विकास की ओर ले जाए| माध्यमिक विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों दोनों में आधारभूत पाठ्यक्रम होने चाहिए जिनका उद्देश्य बालकों को भारतवर्ष, इसके निवासी तथा सांस्कृतिक परम्पराओं का ज्ञान कराना होना चाहिए| **कोठारी कमीशन (1964-66)** की रिपोर्ट भी यह सिफारिश करती है कि केंद्र तथा राज्य सरकारों को ऐसे उपाय अपनाने चाहिए जो किनैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा को सब विद्यालयों में लागू कराए|

विद्यालय समाज का एक लघु रूप है, जो माध्यमिक स्तर पर अपने बच्चों में संस्कार पोषित करने का कार्य करता है तथा शिक्षा के उद्देश्य, सर्वांगीण विकास के सभी आयामों को उसमे समाहित करने का कार्य करता है| विद्यालयी परिवेश विद्यार्थियों में उच्च स्तर का मूल्य वर्धन व पोषण चाहता है जिससे देश की सभी इकाईयां पुष्ट हो सकें|

अध्ययन की आवश्यकता : हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम दो ऐसे माध्यम हैं जहां विद्यार्थियों को जीवनयापन हेतु मिलने वाली सुविधाओं में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है| इन सुविधाओं के साथ- साथ विद्यार्थियों के शिक्षण का माध्यम एवं पाठ्यक्रम भी उनके मूल्य निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं| प्रस्तुत अध्ययन में इन दोनों माध्यमों के विद्यार्थियों के मूल्यों में क्या सम्बन्ध है इसी का उत्तर प्राप्त करने हेतु यह अध्ययन किया गया है|

अध्ययन का उद्देश्य: प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं-

1. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना|
2. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना|

3. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना|
4. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना|
5. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना|

परिकल्पना: अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु निम्न शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण एवं परीक्षण किया गया-

1. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है|
2. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है|
3. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है|
4. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है|
5. हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है|

अध्ययन विधि: हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा आजमगढ़ जनपद में हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 के 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि की लाटरी विधि द्वारा किया गया, जिसमे 100 हिन्दी माध्यम एवं 100 अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी म्मिलित थे|

उपकरण : प्रस्तुत अध्ययन में हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक, सैद्धांतिक, आर्थिक, सौंदर्यात्मक एवं धार्मिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है| मूल्यों के मापन हेतु जी. पी. शैरी एवं आर.पी. वर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य अनुसूची का प्रयोग किया गया|

सांख्यिकीय तकनीकी: आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा सी-आर मूल्य का उपयोग किया गया|

आंकड़ों का विश्लेषण एवं परिणाम: प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वप्रथम चयनित न्यादर्श पर व्यक्तिगत मूल्य अनुसूची को प्रशासित कर मानक के अनुसार उसका अंकन किया गया तथा प्राप्त प्राप्तांकों के मध्य तुलना हेतु CR-परीक्षण किया गया| CR- परीक्षण से प्राप्त परिणामों को तालिका 1 से 5 तक निम्नवत प्रस्तुत किया गया है -

तालिका-1: हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण -

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR-मान	सार्थकता स्तर
हिन्दी माध्यम	200	39.50	7.20	4.02	.01 स्तर पर सार्थक
अंग्रेजी माध्यम	200	35.70	6.80		

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि हिन्दी माध्यम से अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के प्राप्तांकों का मध्यमान, अंग्रेजी माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमन से अधिक है तथा इन दोनों समूहों का CR-मान 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मानों से अधिक है| अतः स्पष्ट है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य अधिक है| अतः परिकल्पना "हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत की जाती है|

तालिका-2: हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण-

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR - मान	सार्थकता स्तर
हिन्दी माध्यम	200	42.40	12.87	0.241	**सार्थक नहीं**
अंग्रेजी माध्यम	200	42.69	11.20		

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि यद्यपि अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्यों का मध्यमान, हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के मध्यमान से कम है किंतु इन दोनों मध्यमानों का CR- मान सार्थक नहीं है | अतः स्पष्ट है कि हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्यों में कोई सार्थक

अन्तर नहीं है | अतः परिकल्पना- 2 "हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है |" स्वीकृत की जाति है |

तालिका-3: हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण-

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR - मान	सार्थकता स्तर
हिन्दी माध्यम	200	38.21	13.23	2.76	0.01 स्तर पर सार्थक
अंग्रेजी माध्यम	200	41.66	11.73		

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों का मध्यमान, हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है तथा इन दोनों मध्यमानों का CR-मान 0.01 स्तर पर सार्थक है| अतः स्पष्ट है कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की तुलना में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का आर्थिक मूल्य अधिक है अतः परिकल्पना-3, "हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत की जाती है|

तालिका- 4: हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण-

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR - मान	सार्थकता स्तर
हिन्दी माध्यम	200	31.22	16.94	1.75	सार्थक नहीं
अंग्रेजी माध्यम	200	34.23	17.51		

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्यों का मध्यमान, अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्यों के मध्यमान से कम है किन्तु इन दोनों मध्यमानो का CR- मान सार्थक नहीं है| अतः स्पष्ट है कि हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है| अतः परिकल्पना- 4, "हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकृत की जाती है|

तालिका- 5: हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों का तुलनात्मक विवरण-

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	CR - मान	सार्थकता स्तर
हिन्दी माध्यम	200	38.20	13.75	1.24	सार्थक नहीं
अंग्रेजी माध्यम	200	36.50	13.58		

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों का मध्यमान, अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों के मध्यमान से अधिक है किन्तु इन दोनों मध्यमानों का CR- मान सार्थक नहीं है| अतः स्पष्ट है कि हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है| अतः परिकल्पना- 5, "हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकृत की जाती है|

निष्कर्ष एवं परिणाम: अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष एवं परिणाम प्राप्त हुए -

1.हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है| हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी, अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा सामाजिक मूल्यों को अधिक महत्व देते हैं|

2.हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अर्थात हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्यों में समानता है|

3.हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है| अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा आर्थिक मूल्यों को अधिक महत्व देते हैं |

4.हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्यों में समानता है|

5.हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों में समानता है| प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त निष्कर्ष हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के मूल्यों की स्थिति को व्यक्त करते है| इस अध्ययन में जहां एक ओर हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक, सौंदर्यात्मक एवं धार्मिक मूल्यों में

समानता दृष्टिगत होती है तो वही दूसरी ओर उनके सामाजिक एवं आर्थिक मूल्यों में असमानताएं भी परिलक्षित होती है| अतः शिक्षण के क्षेत्र में ऐसे व्यक्तियों का प्रादुर्भाव हो जो अध्यापकोचित मूल्यों वाले हों, जो अपने मूल्यों से विद्यार्थियों को प्रेरणा दे सके और राष्ट्र एवं मानवता की सेवा में उनको तत्पर कर सकें, साथ ही साथ पाठ्यक्रम में ऐसे विषयवस्तु शामिल किए जाएं जिससे उनके जीवन मूल्यों में संवर्धन किया जा सके|

सन्दर्भ सूची:

1. कपिल, एच.के.(2006) : "सांख्यिकी के मूल तत्व" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा|
2. गुप्ता, एस. पी. (2011) : "अनुसंधान संदर्शिका" शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज|
3. सिंह, अरुण कुमार (2008) : "मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां" मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली|
4. मंगल, एस. के. (2010) : "शिक्षा मनोविज्ञान" पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली|
5. सारस्वत, मालती (2012) : "शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा" आलोक प्रकाशन, लखनऊ|
6. गुप्ता, एस. पी. (2008) : "आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन" शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज|
7. पाण्डेय, रामसकल (1998) ; "शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांत" अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा|